हाइकू बोला पतियोगिता

आचार्य श्री द्वारा विरचित हाइकू लगातार बोलना ह ।
सबसे ज्यादा हाइकू बोलने वाला स्पर्धा का विजेता रहेगा।
विशेष सूचना : – गुरूजी द्वारा विरचित हाइकू डिस्प्ले बोर्ड पर (Display) डिस्प्ले किये जायेंगे।
कालावधि :– दो मिनिट

गुरु कृपा से बांसुरी बना मैं तो ठेठ बांस था।	मत दिलाओ विश्वास लौट आता व्यवहार से।	ज्ञान प्राण है संयत हो तो त्राण अन्यथा श्वान।
पर की पीड़ा अपनी करुणा की परीक्षा लेती।	तेरी दो आँखें तेरी ओर हज़ार सतर्क हो जा।	गुणालय में एक आध दोष भी तिल सा लगे।
मन अपना अपने विषय में क्यों न सोचता ?	निश्चिंतता में भोगी सो जाता.. वहीं योगी खो जाता ॥	बाँध भले ही बांधो, नदी बहेगी अधो या उर्ध्व ॥
बिना डाँट के शिष्य और शीशी का भविष्य ही क्या ?	जीत सको तो किसी के दिल जीतो सो, बैर न हो ॥	दर्पण कभी न रोया न हँसा, हो ऐसा संन्यास ॥
गुरु और शिष्य आगे-पीछे दोनों में अन्तर कहाँ ?	पूरक बनो सिंह से वन, सिंह वन से बचा ॥	हमारे दोष जिनसे फले फुले वे बंधू कैसे ? ॥
केन्द्र को छूती नपी सीधी रेखाएँ वृत्त बनाती।	हम से कोई दुखी नहीं हो बस यही सेवा है ॥	दूध पे घी है घी से दूध न दबा घी लघु बना ॥
शत्रु मित्र में समता रखो, न कि भक्ष्या भक्ष्य में ॥	संकट से भी धर्म-संकट और विकट होता ॥	खाल मिली थी यही मिट्टी में मिली खली जाता हूँ ॥
ज्ञान ज्ञेयसे बड़ा आकाश आया छोटी आँखों में ॥	जिज्ञासा यानी प्राप्त में असंतुष्टि धैर्य की हार ॥	ऊपर जाता किसी को न दबाता घी गुरु बना ॥
आस्था झेलती जब आपत्ति आती ज्ञान चिल्लाता ॥	अति मात्रा में पथ्य भी कुपथ्य हो मात्रा माँ सी हो ॥	अर्पित यानि मुख्य, समर्पित सो अहं का त्याग ॥
सदुपयोग ज्ञान का दुर्लभ है मद सुलभ ॥	खूब बिगड़ा तेरा उपयोग है योग कर ले ॥	नीर नहीं तो समीर सही प्यास कुछ तो बुझे.. ॥

जुड़ो ना जोड़ो, जोड़ा छोड़ो जोड़ो तो, बेजोड़ जोड़ो।	संदेह होगा, देह है तो देहाती ! विदेह हो जा ।	ज्ञान प्राण है संयत हो तो त्राण अन्यथा श्वान।
तीर्थंकर क्यों, आदेश नहीं देते, सो ज्ञात हुआ।	छोटी दुनिया, काया में सुख दुःख, मोक्ष नरक ।	किसी वेग में, अपढ़ हो या पढ़े, सब एक हैं ।
कलि न खिली, अंगुली से समझो, योग्यता क्या है ?	चाँद को देखूँ, परिवार से घिरा, सूर्य सन्त है ।	मैं निर्दोषी हूँ, प्रभु ने देखा वैसा, किया करता।
प्रभु ने मुझे, जाना माना परन्तु, अपनाया ना।	परिचित भी, अपरिचित लगे, स्वस्थ्य ध्यान में (बस हो गया)।	टिमटिमाते, दीपक को भी देख, रात भा जाती।
भूख मिटी है, बहुत भूख लगी, पर्याप्त रहें।	पूर्ण पथ लो, पाप को पीठ दे दो, वृत्ति सुखी हो।	पक्ष व्यामोह, लौह पुरुष को भी, लहू चूसता।
साधु वृक्ष है, छाया फल प्रदाता, जो धूप खाता।	ध्वजा वायु से, लहराता पै वायु, आगे न आती।	आँखें लाल है, मन अन्दर दोषी, दोनों में कौन ?
मद का तेल, जल चुका बुझा सो, विस्मय द्वीप।	सामायिक में, कुछ न करने की, स्थिति होती है।	इष्ट-सिध्दि में, अनिष्ट से बचना, दुष्टता नहीं।
कछुए सम, इन्द्रिय संयम से, आत्म रक्षा हो।	तैराक बनूँ, बनूँ गोताखोर सो, अपूर्व दिखे।	वर्षा के बाद, कड़ी मिट्टी सी माँ, दोषी पुत्र पे।
प्रदर्शन तो, उथला है दर्शन, गहराता है।	धर्म का फल, बाद में न अभी है, पाप का क्षय।	संघर्ष में भी, चंदन सम सदा, सुगन्ध बाटूँ।
योग प्रयोग, साधन है साध्य तो, सदुपयोग।	सीना तो तानो, पसीना तो बहाओ, सही दिशा में।	योग साधन, है उपयोग शुद्धि, साध्य सिद्ध हो।
सरोवर का, अन्तरंग छुपा क्यों ? तरंग वश।	मान शत्रु है, कछुआ बन बचूँ, खरगोश से।	वैधानिक तो, पहले बनो फिर, धनिक बनो।